डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद
की पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत

:- शोध - सार:-

डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य : एक अनुशीलन

शोध-छात्र

कु. लक्ष्मी किसनराव मनशेट्टी

एम.ए., सेट, नेट. (हिंदी)

कला, विज्ञान व वाणिज्य

महाविद्यालय, नलदुर्ग जि. उस्मानाबाद

शोध-निर्देशक

डॉ. हाशमबेग मुसाबेग मिर्झा

हिंदी विभाग,

कला, विज्ञान व वाणिज्य

महाविद्यालय, नलदुर्ग जि. उस्मानाबाद

४१३६०२ (महाराष्ट्र)

मार्च - २०१३

डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य : एक अनुशीलन

साहित्य समाज का दर्पण होता है । समाज में जो घटित होता है वही साहित्य में लिखा जाता है । साहित्य व्यक्ति के अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है । साहित्य के द्वारा व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति को सुंदर, विलक्षण तथा व्यंजनात्मक रुप में व्यक्त करता है । साहित्य की कई विधाएँ हैं, जिनके माध्यम से अभिव्यक्ति अपने सरल रुप में व्यक्त की जाती है । जैसे - कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध तथा कथेत्तर गद्य साहित्य । निबंध के साथ-साथ कथेत्तर साहित्य ने भारतीय समाज में एक चेतना भर दी है । कथेत्तर गद्य साहित्य ने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्रकृतिविषयक, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है ।

डॉ. धर्मवीर भारती ने कथेत्तर गद्य साहित्य के माध्यम से रोमानियता के साथ-साथ कई समस्याओं का उद्‌घाटन किया है । कथेत्तर गद्य साहित्य में यात्रावृतांत,रिपोर्ताज,डायरी, पत्र,जीवनी,आत्मकथा, संस्मरण, अनूदित साहित्य आदि विधाएँ आती हैं। इसमें डॉ. धर्मवीर भारती ने प्रेमभावना,सौंदर्य, पलायन, आदर्श एवं समसामायिक समस्याएँ आदि को प्रस्तुत किया है । डॉ. धर्मवीर भारती का साहित्य निम्न-मध्यवर्गीय जीवन की त्रासदी को व्यक्त करता है । हर एक भाव को उन्होंने अपने साहित्य में समाहित किया है । डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य यथार्थ जीवन से जुडा हुआ है ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार डॉ. धर्मवीर भारती का हिंदी साहित्य में बहुत बडा योगदान रहा है । कथेत्तर गद्य साहित्य में भारती जी का अनन्य साधारण महत्व माना जाता है। उन्होंने निबंध, संस्मरण, आलोचना, यात्रावृत्तांत, पत्र-लेखन एवं अनूदित साहित्य आदि विधाओं में सृजन-कार्य किया है ।

डॉ. धर्मवीर भारती ने जिस विधा में सृजन-कार्य किया वह अत्यंत ही सफल रहा है। प्रत्येक साहित्यिक विधा में डॉ. धर्मवीर भारती ने एक या दो ही कृतियाँ लिखी हैं, लेकिन वे इतने सफल रहे हैं, कि उन विधा को उच्चतम कोटि की विधाएँ मानना अतिशयोक्ति नहीं होगी । ऐसे महान साहित्यकार के कथेत्तर गद्य साहित्य को जानने के लिए प्रस्तुत शोध -विषय का चयन किया गया है ।

● शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :-

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन या शोध-अध्ययन करने के पूर्व उसके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होना आवश्यक माना जाता है । जब मै बी.ए. प्रथम वर्ष में पढती थी तब पाठयक्रम में डॉ. धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' पढने में आयी । इस कहानी में चित्रित नारी पात्र 'गुलकी' को डॉ. भारती ने जिस संवेदनशील रुप में चित्रित किया था उस रुप को देखकर मुझे डॉ. भारती के साहित्य के प्रति रुचि पैदा हो गई । एम.ए. (हिंदी) के बाद मैंने सेट/नेट की पढाई आरंभ की तब सेट/नेट के पाठयक्रम में डॉ. भारती का 'अंधायुग' नामक काव्य-नाटक पढा मिथकीय चेतना पर आधारित इस काव्य-नाटक में. डॉ. भारती ने जिन आधुनिक बोध को चित्रित किया था उससे मैं बहुत प्रभावित हो गई । तभी मैंने निश्चय किया कि, मै, डॉ. धर्मवीर भारती के साहित्य पर अध्ययन करुँगी ।

इस विषय को लेकर मैंने हिंदी विद्वानों से चर्चा कर अनुसंधान के संबंध में उनकी राय ली। तभी मेरा अनुसंधान का विषय निश्चित हो गया । इस विषय के संबंध में मैने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के हिंदी विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ. माधव सोनटक्के सर, डॉ. अंबादास देशमुख सर एवं डॉ. गणेशराज सोनाळे सर आदि से चर्चा की । तथा कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नलदुर्ग के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुभाष राठोड सर, डॉ. मिर्झा सर तथा डॉ. गायकवाड सर आदि गुरुजनों से चर्चा की । अंतत: यह निश्चित हो गया कि, अनुसंधान का विषय 'डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य' हो सकता है । आदरणीय गुरुवर्य डॉ. मिर्झा सर के मार्गदर्शन में इस विषय को अंतिम रुप दिया है ।

डॉ. धर्मवीर भारती के काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी तथा पत्रकारिता पर अध्ययन या शोध-अध्ययन काफी मात्रा में हो चुका है । किंतु उनके निबंध, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, आलोचना, अनूदित ग्रंथ आदि पर अभी तक कोई शोध या अध्ययन कार्य नहीं हुआ है । इसलिए हमने शोध - विषय के रुप में डॉ. धर्मवीर भारती क कथेत्तर गद्य साहित्य चयनीत किया।

● प्रस्तुत शोध-विषय का उद्देश्य :-

इस अनुसंधान के माध्यम से डॉ. धर्मवीर भारती के निबंधों में चित्रित निम्न मध्यवर्गीय समाज की त्रासदी को उजागर किया गया है । प्रकृतिपरक निबंधों के माध्यम से आज के यातायात के कारण होनेवाले वनों के विनाश को रोक कर उनके उपयोगिता का परिचय कराया गया है । आज-कल जो संकुचित स्वार्थी वृत्ति के लोग हैं उनके मन में प्रेम भावना को जगाने का प्रयास किया गया हैं । राष्ट्रभाषा संबंधी निर्माण होनेवाली समस्या को व्यंग्यात्मक तथा समस्यापरक निबंधो के माध्यम से प्रकट किया गया है । डॉ. धर्मवीर भारती के निबंधो में व्यक्त सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, आर्थिक तथा शैक्षणिक समस्याओं को प्रकट किया है । विभिन्न समस्याओं को केंद्र में रखकर सामाजिक नीतिमत्ता तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना करना इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है ।

अनूदित साहित्य के माध्यम से हमारे साहित्य की कक्षा विस्तृत करना, भारतीय संस्कृति और डॉ. धर्मवीर भारती के निबंधों में चित्रित विचारों को स्पष्ट करना, भारतीय जनजीवन को पत्रकारिता के यथार्थ रुप दिखाना आदि इस शोध-कार्य का उद्देश्य रहा है।

डॉ. धर्मवीर भारती ने लगभग सताईस वर्षों तक ‘धर्मयुग’ जैसी लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण पत्रिका का संपादन किया । साथही ‘अभ्युदय’,‘संगम’, ‘आलोचना’, ‘निकष’ आदि पत्रिकाओं में अपने संपादकीय, वैचारिक, भाषिक, पत्रकारिता संबंधी, व्यंग्यात्मक, आत्मकथात्मक, आदि लेख लिखे हैं । साथ ही इन्हीं पत्रिकाओं में के अंश प्रकाशित किये । इसे आगे चलकर 'प्रगतिवाद एक समीक्षा', 'ठेले पर हिमालय', 'पश्यंती', 'कहनी-अनकहनी', 'यात्राचक्र'आदि ग्रंथों में प्रकाशित किया गया हैं। इन विषयों पर समग्र रुप से अध्ययन नहीं हुआ हैं। मेरे शोध-कार्य का उद्देश्य है, डॉ. धर्मवीर भारती के समग्र कृतित्व को प्रस्तुत करना। इस शोध-कार्य से उनका व्यक्तित्व और कृतित्व और भी निखर उठे यही उद्देश्य रहा है। अत: मैने अपने शोध मे इसी कार्य को पूरा किया है।

• शोध-विषय का महत्त्व :-

गद्य साहित्य को अभिव्यक्ति का सरल, सहज माध्यम माना जाता है। निबंध गद्य की महत्वपूर्ण विधा मानी जाती हैं। इसी कारण आ. शुक्ल ने निबंध को गद्य की कसोटी कहा है। नि:संदेह निबंध में गद्य की अभिव्यंजना-शक्ति का पूर्ण चमत्कार तथा सौंदर्य एवं माधुर्य का चरम विकास दृष्टिगोचर होता है। आलोचना-साहित्य के माध्यम से साहित्य के गुण-दोष आदि पर प्रकाश डाला गया है। अनूदित साहित्य से अन्य भाषा के साहित्य की जानकारी प्राप्त होती है। व्यंग्य, पत्र, डायरी, आत्मकथा, संस्मरण, यात्रा-विवरण आदि के अध्ययन से हमारी ज्ञानकक्षा विस्तृत हो जाती है।

अध्ययन करते समय मेरी रुचि 'कथेत्तर गद्य साहित्य' में जाग्रत हुई और निरंतर वृंध्दिगत होती गई। अत: मैंने डॉ. धर्मवीर भारती के 'कथेत्तर गद्य साहित्य' को शोध-कार्य के लिए निश्चित किया। डॉ. धर्मवीर भारती के कथेत्तर गद्य साहित्य' मे समाहित प्रेम, भावना, सौंदर्य ,प्रकृति वर्णन, आदर्श तथा सभी प्रकार की समस्याएँ आदि संदर्भ ने मुझे काफी प्रभावित किया। डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध यथार्थवादी रहे हैं। उन्होने रोमानी भाषा के साथ-साथ निम्न-मध्यवर्गीय त्रासदी को जिस रुप में प्रस्तुत किया हैं, उसे देखकर उनके यथार्थ विचारों पर प्रकाश डाला गया है। डॉ. धर्मवीर भारती के कथेत्तर गद्य साहित्य में प्रकृति मूलकता, रोमांटिकता, संवेदनशीलता आदि विभिन्न समस्यांओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। अत: इस दृष्टि से **"डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य एक अनुशीलन"** यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण सिध्द होगा।

• शोध-प्रबंध की व्याप्ति :-

शोध-विषय का अनुसंधान सुचारु रुप से संपन्न करने के लिए उसका नियोजन होना अनिवार्य है। शोध-कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-विषय **'डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य: एक अनुशीलन'** को आठ अध्याय में विभाजित किया हैं-

१) प्रथम अध्याय :- रचनाकार डॉ. धर्मवीर भारती
२) व्दितीय अध्याय :- हिंदी कथेत्तर गद्य साहित्य का परिचय
३) तृतीय अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध-साहित्य का अनुशीलन
४) चतुर्थ अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के यात्रा-साहित्य का अनुशीलन

५) पंचम अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के संस्मरण-साहित्य का अनुशीलन

६) षष्ठम अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के संपादकीय एवं पत्र-लेखन साहित्य का अनुशिलन

७) सप्तम अध्याय:- डॉ. धर्मवीर भारती के आलोचनात्मक एवं अनुदित साहित्य का अनुशीलन

८) अष्ठम अध्याय :- उपसंहार/निष्कर्ष.

- **प्रथम अध्याय :- रचनाकार डॉ. धर्मवीर भारती**

इस अध्याय के अंतर्गत डॉ. धर्मवीर भारती के व्याक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। डॉ. भारती के व्यक्ति परिचय में उनका जन्म, बचपन, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, प्रणय-जीवन, वैवाहिक जीवन, मित्र-परिवार, उपजीविका, प्रेरणा, शौक, सम्मान तथा पुरस्कार एवं संतान आदि का परिचय दिया गया है।

डॉ. भारती के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर भी विचार किया गया है। इसमें भारती जी का स्वभाव, संस्कार, संघर्ष, आत्मसम्मान, भावुकता, संवेदनशीलता, श्रृंगारिकता, चिंतनशीलता, संगीतप्रेम, गीता, मनोविज्ञान ,अस्तित्ववाद आदि का प्रभाव इन पर समग्र रुप से अध्ययन किया गया है।

डॉ. भारती का रचना-संसार काफी वडा है। उन्होंने साहित्य के लगभग सभी विधाओं में सृजन-कार्य किया है। सर्व प्रथम भारती जी एक महान कवि के रुप में जाने जाते हैं। इस अध्याय में उनके व्दारा लिख्रित कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आदि कथात्मक साहित्य का विवेचन किया गया है। डॉ. धर्मवीर भारती का कथेत्तर गद्य साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। उनके व्दारा लिख्रित निबंध, संस्मरण, रिपोर्ताज, यात्रा वृतांत, आलोचना, अनुवाद, पत्र-लेखन साहित्य आदि कथेत्तर गद्य विधाओं का अध्ययन किया गया है। साथही उन्हें एक पत्रकार के रुप में भी प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष रुप में डॉ. धर्मवीर भारती के पारिवारिक एव् साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। उनके पारिवारिक संघर्ष का भी विश्लेषण किया गया है। बहुमुख्री प्रतिभा के साहित्यकार के रुप में उन्हें प्रस्तुत किया गया है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं के आधारपर उन्हें एक बहुव्यक्तित्व वादी साहित्यकार के रुप में प्रस्तुत किया गया है। अंत में इस अध्याय के विविध पहलुओं को निष्कर्ष रुप में व्यक्त किया गया है।

२) व्दितीय अध्याय - हिंदी कथेत्तर गद्य साहित्य का परिचय

इस अध्याय में कथेत्तर गद्य साहित्य का परिचय दिया गया है। गद्य साहित्य के दो प्रकार माने जाते हैं - (१) कथात्मक गद्य साहित्य (२) कथेत्तर गद्य साहित्य। इसमें कथात्मक एवं कथेत्तर गद्य साहित्य का अलग-अलग रुप में विश्लेषण किया गया है। कथेत्तर गद्य साहित्य के विकास पर विचार किया गया है। भारतेंदु पूर्व कथेत्तर गद्य, भारतेंदु युगीन कथेत्तर गद्य, व्दिवेदी युगीन कथेत्तर गद्य, शुक्ल युगीन एवं शुक्लोत्तर युगीन कथेत्तर गद्य साहित्य आदि पर प्रकाश डाला गया है। कथेत्तर गद्य साहित्य के तत्व तथा उसके प्रकार आदि का विवेचन किया गया है।

कथेत्तर गद्य साहित्य के अंतर्गत जीवनी, आत्मकथा, पत्रलेखन, डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावर्णन, रिपोर्ताज, निबंध, आलोचना, अनूदित साहित्य आदि विधाओं का परिचय दिया गया है। इन विधाओं की व्याख्या, तत्व, विशेषताएँ विकास आदि का परिचय दिया गया है। इन कथेत्तर गद्य विधाओं का हिंदी साहित्य में जो योगदान रहा है, उस पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है। इन विधाओं में जिन साहित्यकारों मे अपनी कलम चलाई है उसे भी समग्र रुप से प्रस्तुत किया गया है।

इस कथेत्तर गद्य विधाओं में से जिन विधाओं में डॉ. धर्मवीर भारती ने लेखन-कार्य किया है, उसका संक्षेप में वर्णन किया गया है। कथेत्तर गद्य साहित्य के महत्व को भी प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय के अंत में कथेत्तर गद्य साहित्य के महत्व को स्पष्ट किया गया है । गद्य साहित्य में कथात्मक गद्य की अपेक्षा कथेत्तर गद्य साहित्य यथार्थवादी है इसे स्पष्ट किया गया है । अत: हिंदी गद्य साहित्य में कथेत्तर गद्य साहित्य की सभी विधाओं के योगदान पर अध्ययन किया गया है ।

३) तृतीय अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध साहित्य का अनुशीलन :-

निबंध कथेत्तर गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा मानी जाती है । इस अध्याय के अंतर्गत प्रथमत: निबंध साहित्य के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डाला गया है । इसके उपरान्त भारती जी के निबंध साहित्य का विस्तार से विवेचन किया गया है । भारती जी के निबंध साहित्य के माध्यम से उनके भाव विचार तथा अनुभव आदि का परिचय दिया गया है । भारती जी के तीन निबंध संग्रह हैं - १) ठेले पर हिमालय २) पश्यंती ३) कहनी-अनकहनी।

१) ठेले पर हिमालय :-

इस निबंध संग्रह में गद्य की विविध शैलियों का समावेश किया गया है । जैसे- यात्राविवरण , डायरी, पत्र, साहित्यिक-डायरी, शब्दचित्र, संस्मरण, केरीकेचर, व्यंग्य,रुपक, श्रध्दांजली आदि इस निबध संग्रह में प्रकृति का सुकुमार वर्णन किया गया है। इसमें चित्रित निबंधों को अलग-अलग वर्गो में विभक्त किया गया है ।

२) पश्यंती :-

इस निबंध-संग्रह में समीक्षात्मक निबंधों का संकलन किया गया है ।इसमें भी गद्य की विविध शैलियों का समावेश प्रस्तुत किया गया है । इस निबंध-संग्रह के माध्यम से भारती जी को बहुआयामी साहित्यकार के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

३) कहनी - अनकहनी :-

डॉ. भारती के इस निबंध-संग्रह में विभिन्न समस्याओं का चित्रण रहा है। ये सभी निबंध विचारात्मक रहे हैं। इन निबंधो के माध्यम से भारती जी को **विचारात्मक निबंधकार** के रुप में सिध्द किया गया है ।

तीनों निबंध संग्रह में संग्रहित निबंधो को अलग-अलग वर्ग में वर्गीकृत किया गया है । **ठेले पर हिमालय** एवं **पश्यंती** के संग्रहित कई निबंध प्रकृति-चित्रण से ओत:प्रोत दिखाई देते हैं। इसी आधार पर **प्रकृति परक निबंध** का अलग से वर्गीकरण किया गया है । भारती जी के कई निबंधो में आत्मपरकता दिखाई देती है । इसीलिए कई निबंधों को **आत्मपरक/व्यक्तिव्यंजक** निबंध के वर्ग में रखा गया है । भारती जी एक कवि होने के कारण उनके सभी रचनाओं में भावात्मकता दिखाई देती है । उनके निबंध भी भावात्मक रहे हैं । इसी आधारपर कई निबंधों को 'भावात्मक निबंध' कहा गया है । भारती जी एक विचारवादी साहित्यकार माने जाते हैं। **पश्यंती** एवं **कहनी-अनकहनी** के कई निबंधों को विचारात्मक निबंधों में विभाजित किया गया है । व्यंग्य के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्रण सामने आ जाता है । इसे ध्यान में रखकर कई यथार्थवादी निबंधों को 'व्यंग्यात्मक निबंध' के वर्ग में रखा गया है । कहनी-अनकहनी निबंध संग्रह समस्यापर निबंधों से भरा हुआ

दिखाई देता है । इसीलिए इस संग्रह के निबंधो को समस्यापरक निबंध के रुप में वर्गीकृत किया गया है ।

अंत मे डॉ. धर्मवीर भारती के निबंधों की विविधताओं पर प्रकाश डाला गया है । इस निबंध संग्रह के माध्यम से भारती जी के भावों और विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है । इसमें भारती जी का प्रकृति-प्रेम, राष्ट्र की समस्या के प्रति चिंताभाव आदि का विवेचन किया गया है । इन निबंधों के माध्यम से भारती जी को एक सफल निबंधकार के रुप में प्रस्तुत किया गया है । इसके साथही इस अध्याय के अंत में निष्कर्ष भी दिये गये हैं।

४) चतुर्थ अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के यात्रा-साहित्य का अनुशीलन

इस अध्याय में हिंदी के यात्रा साहित्य तथा भारती जी के यात्रा-साहित्य पर प्रकाश डाला गया है । इसमें सर्वप्रथम हिंदी के यात्रा-साहित्य के विकास पर विचार किया गया है । भारतेंदु युगीन यात्रा-साहित्य, द्विवेदी युगीन यात्रा-साहित्य, शुक्ल युगीन यात्रा-साहित्य, तथा शुक्लोत्तर युगीन यात्रा-साहित्य विकास पर प्रकाश डाला गया है। हिंदी यात्रा-साहित्य में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उनका उल्लेख किया गया है ।

डॉ. भारती के यात्रा-साहित्य पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है । भारती जी ने **यात्राचक्र** नामक यात्रावृत्तांत लिखा है । इस यात्राचक को तीन भागों में विभाजित किया गया है ।

१. चक्र एक - इंग्लैंड , जर्मनी , इंडोनेशिय , मॉरिशस
२. चक्र दो - युध्दयात्राएँ
३. चक्र तीन-चीन-अर्वाचीन, प्राचीन आदि।

१. चक्र एक :- इंग्लैंड , जर्मनी, इंडोनेशिया, मॉरिशस :-

इस यात्राचक्र में भारती जी के इंग्लैंड ,जर्मनी, इंडोनेशिया तथा मॉरिशस की यात्रा का वर्णन किया गया है । इसमें भारती जी के यात्रा- अनुभव को रोचक रुप में चित्रित किया गया है ।

२. चक्र दो :- युध्दयात्राएँ :-

इस यात्राचक्र में भारती जी के बांग्लादेश मुक्तिसंग्राम के आँखो देखा हाल को चित्रित किया गया है । इस युध्दयात्रा को **मुक्तक्षेत्र-युध्दक्षेत्र, युध्दयात्रा** तथा **युध्दोपरांत**

आदि भागों में विभक्त किया गया है । मुक्तक्षेत्र-युध्दक्षेत्र में भारती जी ने बांग्लादेश मुक्तिसंग्राम का आँखो देखा हाल प्रस्तुत किया है । इसमें भारती जी को जो अनुभव आये थे उसे प्रस्तुत किया गया है । इससें भारती जी के साहस का परिचय दिया गया है ।

'युध्दयात्रा' में भी बांग्लादेश युध्द का वर्णन किया गया है । इसमें जवानों की वीरता, शौर्य, साहस आदि का परिचय दिया गया है । साथही उनके जीवनशैली पर भी प्रकाश डाला गया है ।

'युध्दोपरांत' में बांग्लादेश में भारतीय सेना की विजयगाथा का वर्णन किया गया है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के साहस एंव उदारता का वर्णन किया गया है । अंत में भारतीय जवानों के शौर्यगाथा एवं ताकत का वर्णन किया गया है ।

३. चक्र तीन :- चीन अर्वाचीन - प्राचीन :-

इस यात्रावृत्तांत में भारती जी के चीन यात्रा का वर्णन किया गया है । इसमें चीन की प्राचीन परंपरा एवं संस्कृति का, वहाँ की परिस्थिति आदि का विवेचन किया गया है।

निष्कर्ष रुप में भारती जी के यात्रा अनुभव को प्रस्तुत किया गया है । भारती जी बांग्लादेश मुक्तिसंग्राम के माध्यम से एक पत्रकार के रुप में दिखाई देते हैं। अत : भारती जी को इस यात्रा वृत्तांत में यात्राकार तथा पत्रकार के रुप में प्रस्तुत किया गया है । इस यात्रावृत्तांत के माध्यम में से भारती जी के धुमक्कडी प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है।

५) पंचम अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के संस्मरणात्मक-साहित्य अनुशीलन :-

संस्मरण को कथेत्तर गद्य साहित्य की एक प्रमुख्र विधा मानी जाती है । भारती जी एक संस्मरणकार के रुप में भी प्रसिध्द रहे हैं। इस अध्याय में भारती जी के संस्मरण-साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। हिंदी के संस्मरण साहित्य का उद्‌भव और विकास पर चर्चा की गई है । संस्मरण साहित्य में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है**,** उसका विवेचन किया गया है। भारती जी ने दो संस्मरणात्मक ग्रंथ लिखे हैं। १) कुछ चेहरे :- कुछ चिंतन २) शाब्दिता ।

१) कुछ चेहरे : कुछ चिंतन :-

इस संस्मरण में भारती जी ने अपने सम्पर्क में आये हुए व्यक्तियोंपर संस्मरणात्मक लेख लिखा है। इसमें उन्होंने इन व्यक्तियों की रचनाएँ उनकी चरित्रिक गुण, विशेषताएँ आदि पर प्रकाश डाला है । इस शोध-अध्ययन में इस संस्मरण में चित्रित व्यक्तियों को अलग-अलग वर्ग में रखकर उनका वर्गीकरण किया गया है । कवि, उपन्यासकार, तथा अन्य साहित्यकार आदि का वर्गीकरण किया गया है । साहित्येत्तर व्यक्तियों का भी उल्लेख किया गया है, जिसमें अभिनेता सिपाही, राजनेता आदि का भी उल्लेख किया गया है ।

अंत में, भारती जी को कला के प्रति कितना आकर्षण था इसे स्पष्ट किया गया है। साथही भारती जी के बहु आयामी लेखन-कार्य के बारे में उल्लेख किया गया है। इस लेख के माध्यम से भारती जी को एक समीक्षक के रुप में भी दर्शाया गया है।

२) शब्दिता :-

इसमें भारतीय जीवन दर्शन, संस्कृति, इतिहास, साहित्य, लोकजीवन, परम्परा, तीज, त्यौंहार, आदि का विवेचन किया गया है। इस संकलन के संस्मरणात्मक लेख को अलग-अलग रुप में वर्गीकृत किया गया है । व्यक्तियों पर लिखे संस्मरण प्रकृतिपरक संस्मरण, समस्यापरक संस्मरण, भारतीय संस्कृति, दर्शन, जीवन आदि से संबंधित संस्मरण तथा अन्य संस्मरण आदि रुपों में इन लेखों का वर्गीकरण किया गया है ।

निष्कर्ष में भारती जी के प्रकृतिप्रेम तथा भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था आदि का विवेचन किया गया है । साथही उनकी वैयक्तिक अनुभूतियों को भी प्रस्तुत किया गया है।

अंतत: प्रस्तुत संस्मरण-साहित्य के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है । इन संस्मरण के आधार पर भारती जी के एक नये लेखन कार्य का परिचय दिया गया है ।

६) षष्ठम अध्याय:-डॉ. धर्मवीर भारती के सम्पादकीय लेख एवं पत्रलेखन-साहित्य का अनुशीलन :-

इस अध्याय के अंतर्गत डॉ. धर्मवीर भारती के सम्पादकीय लेख एवं पत्रलेखन साहित्य पर विचार किया गया है । पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम माना जाता है।

इस अध्याय में प्रथमत: हिंदी पत्रकारिता के विकास पर अध्ययन किया गया है। डॉ. धर्मवीर भारती एक सफल सम्पादक माने जाते हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है उसका विवेचन किया गया है। हिंदी पत्रकारिता में उनके द्वारा लिखित सम्पादकीय लेख काफी प्रसिध्द रहे हैं। **अंभ्युदय** के पत्रकार के रुप में भारती जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया था। 'संगम' पत्रिका में भारती जी सह-सम्पादक के रुप में लेख लिखते रहे है **नयी कविता, निकष, आलोचना** इस पत्रिकाओं में भी भारती जी लिखते रहे हैं। **'धर्मयुग'** के सम्पादक के रुप में भारती जी काफी प्रसिध्द रहे हैं। **'धर्मयुग'** ने भारती जी को जो लोकप्रियता दी थी उसका उल्लेख यहाँ किया गया है । **धर्मयुग** हिंदी पत्रकारिता में काफी चर्चित पत्रिका मानी जाती है । धर्मयुग से जुडे साहित्यकारों का उनकी रचनाओं का विवेचन किया गया है । **धर्मयुग** को तत्कालीन सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका के रुप में दर्शाया गया है ।

भारती जी के सम्पादकीय कार्य को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है । एक साहित्यकार की सम्पादकीय छवी को कुशलता से दर्शाया गया है ।

इसी अध्याय में भारती जी के पत्रलेखन साहित्य पर भी विचार किया गया है । पत्रलेखन विधा के विकास का भी विवेचन किया गया है। भारती जी द्वारा लिखित पत्र-संकलन **'अक्षर-अक्षर यज्ञ'** के नाम से प्रसिध्द है।

'अक्षर-अक्षर यज्ञ' में भारती जी ने अपने मित्र परिवार तथा साहित्यकारों को लिखित पत्रों का समावेश किया गया हैं। अध्ययन सुविधा के लिए इसे अलग-अलग वर्गो में वर्गीकृत किया गया है। जैसे - बधाई पत्र, आभार पत्र, क्षमापार्थी पत्र, बिनति पत्र, परिवारिक जीवन के बारे में मित्रों को लिखे हुए पत्र, धर्मयुग के संबंध में लिखे हुए पत्र आदि। इस पत्र-संकलन के माध्यम से भारती जी के व्यक्तिगत जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। कई पत्रों के माध्यम से भारती जी के पारिवारिक जीवन से संबंधित जानकारी मिलती है । इस पत्र-संकलन के द्वारा भारती जी के उदारमतवादी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है । बधाई पत्र के माध्यम से भारती जी को एक शुभचिंतक के रुप में प्रस्तुत किया गया है । आभार तथा क्षमापार्थी पत्र के द्वारा भारती जी को एक अच्छा, संस्कृत व्यक्ति के रुप में दर्शाया गया है । कई पत्रों के माध्यम से धर्मयुग पत्रिका के स्वरुप, व्याप्ति

आदि पर प्रकाश डाला गया है । डॉ. भारती का अन्य साहित्यकारों के साथ कितना गहरा संबंध था इसे प्रस्तुत किया गया है ।

भारती जी के पारिवारिक जीवन , साहित्यिक एवं सम्पादकीय जीवन पर इस पत्र-संकलन द्वारा प्रकाश डाला गया है ।

अंत में भारती जी के सम्पादकीय कार्य का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है । साथही उनके संघर्षपूर्ण पारिवारिक जीवन का भी सार रुप में विवेचन किया गया है ।

७) सप्तम अध्याय :- डॉ. धर्मवीर भारती के आलोचनात्मक एवं अनूदित साहित्य का अनुशीलन :-

इस अध्याय में भारती जी के आलोचनात्मक एवं अनूदित साहित्य पर प्रकाश डाला गया है । हिंदी में आलोचना-साहित्य के विकास पर विचार किया गया है ।

डॉ. धर्मवीर भारती एक आलोचक भी माने जाते हैं । उनके आलोचनात्मक साहित्य में मानवतावादी दृष्टि दिखाई देती हैं। उनकी दो आलोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुई है - १) प्रगतिवाद एक समीक्षा, २) मानवमूल्य और साहित्य।

१) प्रगतिवाद : एक समीक्षा :-

इस आलोचनात्मक ग्रंथ में भारती जी के प्रगतिवादी विचारधारा का उल्लेख किया गया है । इसमें सभी साहित्य में प्रस्तुत प्रगतिवादी धारा का उल्लेख किया गया है । प्राचीन साहित्य का प्रगतिशील कवियों ने जो विरोध दर्शाया है उसके संबंध में भारती जी ने अपने विचार स्पष्ट किये हैं। प्राचीन राष्ट्रीय इतिहास पर लिखित साहित्य को पलायनवाद मानने वालों का विरोध किया है । प्रगतिवाद और रोमांटिक प्रेम का संबंध दिखाया गया है। साहित्यकारों को राजनीति से दूर रहने की सलाह दी है । इस आलोचना में व्यक्ति स्वातंत्र्य, कला, धर्म, ईश्वर, अध्यात्मिक साधना आदि का भारती जी ने समर्थन किया है। अश्लीलता का विरोध किया है युवा कलाकारों को प्रेरित किया है । अंत में भारती जी के मानवतावादी विचारों पर प्रकाश डाला गया है ।

प्रगतिवाद एक समीक्षा के सार रुप को अंत में प्रस्तुत किया गया है । इस ग्रंथ में भारती जी के मानवतावादी उदात्त भावों पर विचार किया गया है ।

२) मानवमूल्य और साहित्य :-

इस आलोचनात्मक ग्रंथ के माध्यम से भारती जी के मानवतावादी दृष्टिकोन का विवेचन किया गया है । इस ग्रंथ को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है । प्रथम खण्ड में **मानवीय मूल्यों के विघटन के कारणों** पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय खण्ड में नयी **मर्यादा का उदय** इसपर प्रकाश डाला गया है । इसमें साहित्य की महता का उल्लेख किया गया है । तृतीय खण्ड में **नये मूल्य और विविध संदर्भ** आदि का उल्लेख किया गया है। इसमें समीक्षा के आयाम, सृजन की प्रक्रिया का मानवीय धरातल, उपन्यास और आत्मान्वेषण एवं नयी कविता और दायित्व की आंतरिकता आदि पर विचार किया गया है।

अंत में भारती जी के मानवतावादी उदात्त विचारों का विवेचन किया गया है । निष्कर्ष में दोनों ग्रंथों के सार को प्रस्तुत किया गया है । इन आलोचनात्मक ग्रंथों के माध्यम से भारती जी को सफल **आलोचक** के रुप में प्रस्तुत किया गया है ।

इस अध्याय के अंतर्गत अनूदित साहित्य का भी विवेचन किया गया है । इसमें हिंदी में अनूदित साहित्य के विकास पर प्रकाश डाला गया है । डॉ. भारती के अनूदित साहित्य का भी विवेचन किया गया है । भारती जी ने दो अनूदित ग्रंथ लिखे हैं- १) ऑस्कर वाइल्ड की कहानियाँ २) देशांतर। इस ग्रंथ के व्दारा भारती जी को **अनूवादक** के रुप में सिध्द किया गया है । भारती जी के अनूदित साहित्य को निष्कर्ष रुप में प्रस्तुत किया गया है । अंत में इस अध्याय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

८) अष्टम अध्याय :- उपसंहार/निष्कर्ष-

इस अध्याय के अंतर्गत सम्पूर्ण शोध-प्रबंध का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है । डॉ. धर्मवीर भारती को एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार के रुप में सारत स्पष्ट किया गया है

। हिंदी साहित्य के लगभग सभी विधाओं में लेखन-कार्य करनेवाले भारती जी को एक सफल साहित्यकार एवं पत्रकार के रुप में प्रस्तुत किया गया है ।

- **समन्वित मुल्यांकन एवं निष्कर्ष:-**

विभिन्न बाहय एवं आंतरिक अनुभूतियों मान्यताओं तथा संवेदनाओं के मिश्रण से निर्मित मनुष्य का व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए एक गहन समस्या बन जाता है। जड वस्तुओं का विश्लेषण जहाँ विज्ञान का एक सर्वाधिक प्रिय विषय रहा है। सामान्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी चरित्रगत विशेषताओं के साथ एक साहित्यकार साहित्य में अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है।

ऐसी स्थिति में जब हम साहित्यकार के व्यक्तित्त्व को विश्लेषित करने का निश्चय अथवा प्रयास करते हैं, तो स्थिति बहुत ही गंभीर हो जाती है ,क्योंकि उनके व्यक्तित्त्व में न जाने कितने पात्रों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष व्यक्तित्व जुडा होता है । ऐसे में यद्यपि हम उसे शब्दों में बाँधने का प्रयास तो करते है , लेकिन वह पूर्णत: नहीं अपितु अंशत: ही ठीक हो सकता है, जो भाषा और शैली के माध्यम से विभिन्न स्थितियों तथा उनके अनुरुप व्यवहार के माध्यम से स्पष्ट होता रहता है । इसी तरह धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व भी इसी मत की पुष्ठि करता है । डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म **२५ दिसंबर १९२६** को इलाहाबाद के **अतरसुइया** नामक मुहल्ले में हुआ । भारती जी की माँ आर्य समाजी थी । पिताजी की मृत्यु के बाद भारती जी को शिक्षा के लिए संघर्ष करना पडा । कठिन परिस्थितियों में भी भारती जी ने एम.ए. हिंदी की परिक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने **डॉ. धीरेंद्र वर्मा** के निर्देशन में **सिध्द-साहित्य में पीएच.डी.** की उपाधि प्राप्त की । कई पत्रिकाओं के भारती जी सम्पादक एवं सह- संपादक रह चुके थे । उससे उनके जीवन का निर्वाह हो जाता था । बाद में प्राध्यापक की नौकरी की । एक सफल साहित्यकार की तुलना में भारती जी का वैवाहिक जीवन असफल दिखाई देता है । जिस किशोरी से वे प्रेम करते थे उसके साथ विवाह नहीं कर सकें । कांता नामक युवती से विवाह तो हुआ लेकिन वह अधिक दिनों तक

टीक न सका। भारती जी का दूसरा विवाह पुष्पा शर्मा से हुआ, आगे चलकर वे ही उनके जीवन का आधार बनी । भारती जी धर्मयुग नामक पत्रिक के कुशल सम्पादक भी थे ।

डॉ. धर्मवीर भारती ने कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, आलोचना, अनूवाद, पत्र-साहित्य आदि विधाओं में लेखन किया है । वे एक प्राध्यापक, समीक्षक, कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, संस्मरणकार, पत्रकार एवं सम्पादक आदि रुप में प्रसिध्द रहे है । उनकी रचनाओं में प्रमुखता से प्रकृति चित्रण, भाव सौंदर्य, विचारात्मकता, मानवीय मूल्य आदि का समावेश हुआ है ।

- **उपलब्धियाँ:-**

१) डॉ. धर्मवीर भारती का कथात्मक तथा कथेत्तर गद्य साहित्य में बडा नाम रहा है ।
२) एक श्रेष्ठ कवि होने के बावजूद भी भारती जी को गद्य साहित्य में भी काफी सफलता प्राप्त हुई है ।
३) उनके द्वारा लिखित कथेत्तर गद्य साहित्य में रोचकता दिखाई देती है । उसमें कहीं भी शुष्कता एवं नीरसता दिखाई नहीं देती ।
४) भारती जी एक सफल सम्पादक के रुप में प्रसिध्द रहे है ।
५) बहुआयामी साहित्यकारों में भारती जी का नाम प्रसिध्द रहा है ।

- **अनुसंधान की नयी दिखाएँ :-**

प्रस्तुत शोध-विषय का अध्ययन करते समय इस विषय से संबंधित अधिक जानकारी सामने आयी । विषय की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-कार्य में कुछ त्रुटियॉं भी रही है । अध्ययन के दौरान ऐसे कई विषय उभर कर सामने आते हैं, जिन पर स्वतंत्र रुप में अनुसंधान किया जा सकता है । भारती जी के साहित्य को लेकर भविष्य में अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कर सकते हैं। वे विषय इसप्रकार हो सकते हैं-

१) डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध -साहित्य का अध्ययन।

२) डॉ. धर्मवीर भारती के कथात्मक-साहित्य में चित्रित आम आदमी ।

३) डॉ. धर्मवीर भारती केअनूदित -साहित्य का अध्ययन ।

४) डॉ. धर्मवीर भारती का साहित्य : भाषा, शैली एक अध्ययन।

५) भारतीय भाषाओं के अन्य पत्रकार एवं भारती जी का तुलनात्मक अध्ययन।

६) भारतीय भाषाओं के अन्य संस्मरणकार एवं भारती जी का तुलनात्मक अध्ययन।

७) भारतीय भाषाओं के अन्य यात्राकार एवं भारती जी का तुलनात्मक अध्ययन।

८) धर्मयुग और धर्मवीर भारती।

९) धर्मयुग में भारती जी का योगदान।

१०) धर्मवीर भारती के जीवन में धर्मयुग का योगदान।

- **परिशिष्ट**

❖ आधार ग्रंथ - धर्मवीर भारती की रचनाएँ -

१) अक्षर - अक्षर यज्ञ :- वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,प्रथम संस्करण, १९९९

२) आद्यन्त :- वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,द्वितीय संस्करण, २००८

३) कहनी-अनकहनी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तीरारा संस्करण - २०००

४) कुछ चेहरे : कुछ चिंतन - वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली ,द्वितीय संस्करण, २००६

५) गुनाहों का देवता - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, चौवनावाँ संस्करण, २००८

६) ठेले पर हिमालय - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, छठा संस्करण, २००६

७) पश्यंती :- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नयी दिल्ली , चौथा संस्करण, २००३

८) प्रगतिवाद : एक समीक्षा- वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली १९९८

९) बंद गली का आखिरी मकान-भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाश नयी दिल्ली, नौवाँ संस्करण-१९९९

१०) मानवमूल्य और साहित्य - भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली ,संस्करण - १९९९

११) यात्रा चक्र- वाणी प्रकाशन , नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण - २००६

१२) शब्दिता :- वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,प्रथम संस्करण, १९९७

१३) सपना अभी भी :- वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ,प्रथम संस्करण - १९९९

१४) सूरज का सातवाँ घोडा :- भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, बीसवाँ संस्करण २००२

❖ **संदर्भ - ग्रंथ :-**

१)कनुप्रिया:-नवमूल्यांकन-नीलम गुप्त, अन्नपूर्णा प्रकाशन, साकेतनगर ,प्रथम संस्करण-१९८८

२) काव्यशास्त्र:-डॉ. भगीरथ मिश्र-विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ,नवम् संस्करण- १९९०

३) काव्यशास्त्र :- डॉ. यतींद्र तिवारी, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर - १९९२

४) धर्मवीर भारती :- लक्ष्मणदत्त गौतम-कुमार प्रकाशन ,मोतीनगर नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण - जुलाई - १९७४

५) धर्मवीर भारती :- अंधायुग और परित्राण का तुलनात्मक अध्ययन - एस.एम. निमावत, पैराडाइज पब्लिसर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण - २००७

६) धर्मवीर भारती का काव्य :- सृष्टि और दृष्टि-डॉ. हरिचरण शर्मा, मलिक एण्ड कम्पनी प्रकाशन जयपुर, प्रथम संस्करण - २००७

७) धर्मवीर भारती की साहित्य साधना - सम्पादक पुष्पा भारती-भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली ,पहला संस्करण - २००१

८) धर्मवीर भारती : चिंतन और अभिव्यक्ति - डॉ. हरिवंश पाण्डेय - अतुल प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण- १९९१

९) धर्मवीर भारती : युगचेतना और अभिव्यक्ति - डॉ. सरिता शुक्ला - चिंतन प्रकाशन, कानपुर ,प्रथम संस्करण - २००४

१०) धर्मवीर भारती : व्यक्ति और साहित्कार - डॉ. पुष्पा वास्कर - अलका प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण - जुलाई १९८७

११) धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व - डॉ. चंद्रकांत बान्दिवडेकर-साहित्य आकादमी, नयी दिल्ली ,प्रथम संस्करण - २००१

१२) पत्रकारिता : इतिहास और प्रश्न - डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र-वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण - २००४

१३) यात्रा साहित्य विधा और इतिहास-डॉ. बापूराव देसाई - विकास प्रकाशन, कानपुर , प्रथम संस्करण - २००५

१४) युगचेता निबंधकार :- डॉ. धर्मवीर भारती - ॉ. मंजूषा श्रीवास्तव, मिलिंद प्रकाशन, हैद्राबाद प्रथम संस्करण - २००८

१५) संस्मरण और संस्मरणकार :- डॉ. मनोरमा शर्मा ,आराधना ब्रदर्स कानपुर, प्रथम संस्करण - १९८८

१६) हिंदी गद्य की नवीन विधाएँ - राजेंद्रप्रसाद श्रीवास्तव ,प्रकाशन साहिय रत्नालय, कानपुर, प्रथम संस्करण - २००२

१७) हिंदी निबंध के सौ वर्ष - डॉ. मृत्युंजय उपध्याय- गिरनार प्रकाशन, गुजरात, प्रथम संस्करण - १९९०

१८) हिंदी पत्रकारिता : कल, आज और कल - सम्पादक सुरेश-गौतम,वीणा गौतम- सत्साहित्य प्रकाश दिल्ली, प्रथम संस्करण - २००१

१९) हिंदी साहित्य का इतिहास - सम्पादक - डॉ. नगेंद्र-मयूर पैपरबैक्स प्रकाशन, चौतीसवाँ संस्करण - २००७

२०) हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. माधव सोनटक्के-विकास प्रकाशन कानपुर - प्रथम संस्करण - १९९२

२१) हिंदी साहित्य का इतिहास - विजयपालसिंह- जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - २००४

२२) हिंदी साहित्य : युग और प्रवृतियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा- अशोक प्रकाशन, दिल्ली - ग्यारहवॉ संस्करण - १९८९।

❖ हिंदी शब्द - कोश :-

१) ज्ञान शब्द कोश - सम्पादक - मुकुंदीलाल श्रीवास्तव।

२) प्रामाणिक हिंदी कोश (संक्षिप्त संस्करण)

आ. रामचंद्र शुक्ल एवं बदरीनाथ कपूर ।

३) मानक हिंदी कोश - खण्ड द्वितीय - सम्पादक - रामचंद्र वर्मा ।

४) मानक हिंदी कोश - खण्ड - पाँचवा- सम्पादक- रामचंद्र वर्मा ।

५) संस्कृत - हिंदी कोश - वामन शिवराम आप्टे ।

६) हिंदी पर्यायवाची कोश - डॉ. भोलानाथ तिवारी।

❖ **हिंदी पत्र - पत्रिकाएँ :-**

राष्ट्रवाणी, विवरण - पत्रिका, समकालीन भारतीय साहित्य, साहित्य अमृत , संचारिका।

शोध- छात्र

मनशेट्टी लक्ष्मी किसनराव

एम.ए., सेट, नेट (हिंदी)

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य

महाविद्यालय, नलदुर्ग

जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

मो.नं. ९६०४०२४९२८

शोध - निर्देशक

डॉ. मिर्झा हाशमबेग मुसाबेग

हिंदी विभाग

कला विज्ञान एवं वाणिज्य

महाविद्यालय, नलदुर्ग,

जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

मो. नं. ९४२१९५१७८६